



THE
MENTORING
PROJECT

संकट में परमेश्वर
पर भरोसा रखना:
तब विश्वास रखना जब
जीवन बिखर जाए



TAYLOR HARTLEY

संकट में परमेश्वर पर
भरोसा रखना:
तब विश्वास रखना जब
जीवन बिखर जाए



TAYLOR HARTLEY

(टेलर हार्टली)

विषय-वस्तु

| | |
|---|----|
| परिचय | 4 |
| भाग I: विलाप | 7 |
| भाग II: जाने कि परमेश्वर कौन है..... | 14 |
| भाग III: परमेश्वर पर और दूसरों पर भरोसा रखना | 22 |
| भाग IV: अपनी कहानी के द्वारा दूसरों से प्रेम करें | 28 |
| निष्कर्ष | 33 |

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए



परिचय

3 फरवरी, सन् 2025 को, सुबह लगभग 6:39 बजे, मेरे पिताजी ने मुझे फोन किया। वह इस समय कभी फोन नहीं करते थे। मेरे नाइट-स्टैंड पर रखा फोन बजने लगा, और जब मैं उसे उठाने लगा, तो वह मुझसे फिसलकर नीचे गिर गया। इससे पहले कि फोन वॉइसमेल पर चला जाए, मैंने बिस्तर से नीचे पैर लटकाए और झुककर फोन उठा लिया। मैं अभी भी नींद में ही था। मैंने कहा, “हाँ पिताजी,” वह बोले, “टे, मुझे तुम्हें यह बताते हुए बहुत दुःख हो रहा है, परन्तु आज सुबह दादी माँ गुजर गईं।”

मुझे इस बात का विश्वास नहीं हुआ। ऐसा नहीं हो सकता। ऐसे अचानक मृत्यु नहीं हो सकती, है न? आपको पहले से कोई चेतावनी तो मिलनी चाहिए। आपको एक एकदम नयी वास्तविकता के लिए अपने आपको तैयार करने का समय मिलना चाहिए। मैं अपनी कटू तो मेरी दादी मेरे लिए एक नायक थीं। परमेश्वर के वचन से कैसे प्रेम करना है, यह उन्होंने मुझे सिखाया। उन्होंने मुझे कहानी की सामर्थ्य के बारे में बताया। उन्होंने मुझे सिखाया कि कैसे सुनना चाहिए, कैसे प्रेम करना चाहिए और कैसे हँसना चाहिए। मेरी दादी सबसे अच्छी थीं, और मैं जो कुछ भी हूँ, उसका श्रेय उन्हीं को जाता है। और अब उन्हें गुजरे हुए छह महीने हो चुके हैं...

आपके विचार से पूरे जीवन में ऐसा कितनी बार महसूस होता है कि आपका जीवन बिखर रहा है? यदि आप मुड़कर अपने जीवन को देखें, तो कितनी बार आपको पहले ही ऐसा महसूस हो चुका है कि आपका जीवन बिखर गया है? जहाँ तक मेरी बात है, तो मेरे विचार से मैं नौ ऐसे अवसरों को याद कर सकता हूँ, जब जीवन में ऐसा महसूस हुआ था। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि ये सभी नौ अवसर गम्भीरता में एक जैसे नहीं थे। और प्रश्न यह नहीं है कि जीवन कितनी बार बिखरा, बल्कि यह है कि कितनी बार ऐसा महसूस हुआ कि जीवन बिखर गया है। अतः, मेरे लिए ऐसा नौ बार हुआ है, और वह नौवाँ अवसर मेरी दादी माँ का गुजर जाना था। आपके लिए ऐसा कितनी बार हुआ है?

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

एक बार, मैं और मेरे पास्टर सेवकाई सम्बन्धी एक यात्रा पर थे। एक रात भोजन के बाद, उन्होंने हमें एक ऐसा खेल खेलने का सुझाव दिया, जो कि पारिवारिक इतिहास पर केन्द्रित हो। इसमें एक दौर पाँच वर्ष के अन्तराल को दर्शाता था, और हर दौर में हममें से हर व्यक्ति वह सब कुछ बताता था, जो हम अपने-अपने दादा जी के जीवन के बारे में जानते थे। अगली रात, हमने वही खेल खेला, और इस बार हमने अपने-अपने पिता जी के जीवन के बारे में बातें कीं। और जो मैंने सीखा वह यह था: मेरे दादा जी और मेरे पिता जी ने अपने जीवनकाल में बहुत से नुकसान उठाए। और मैंने यह भी सीखा कि जैसे-जैसे उनकी आयु बढ़ती चली गई, उन नुकसानों का होना भी बढ़ता गया। इस संसार में जीवन के बारे में एक बात यह है कि यह जितना लम्बा होता है, उतना ही अधिक यह आपसे माँग करता है।

आप अपने हृदय से इसका दाम चुकाते हैं। परिवार के जिन सदस्यों से आप प्रेम करते हैं, वे गुजर जाते हैं। जो मौके आप चाहते थे, वे किसी और को मिल जाते हैं। जिन बातों का अनुभव आप कभी नहीं करना चाहते, वे आपके साथ... या किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जिससे आप प्रेम करते हैं, घटित हो जाते हैं। इस संसार में जीवन कष्टदायी होने वाला है। ऐसा लगेगा कि जैसे जीवन बिखर रहा है। अतः, ऐसा आपके साथ कितनी बार होगा? और वास्तविकता यह है... कि ऐसा चाहे कितनी भी बार हो, आप जितना लम्बा जिँएंगे, इसकी संख्या निश्चित रूप से बढ़ती ही चली जाएगी। आपको कोई फोन कॉल, कोई बीमारी की जाँच, या कोई सूचना मिलेगी, और ऐसा लगेगा कि जैसे कमरे से सारी हवा ही निकल गई हो; जैसे कि इस संसार की सारी भलाई बुराई में बदल गई हो; जैसे कि सूरज से निकलने वाला सारा प्रकाश अंधेरा हो गया हो। तब आप क्या करेंगे?

इस प्रश्न का उत्तर ही इस मार्गदर्शिका के पीछे के बोझ का निर्माण करता है। इस मार्गदर्शक परियोजना में, हम बाइबल के सिद्धान्तों पर आधारित ऐसी व्यावहारिक मार्गदर्शिकाएँ तैयार करना चाहते हैं, जो उन अनेक परिस्थितियों के लिए जिनका आप सामना करेंगे और उन जीवन-कौशलों के लिए, जिनकी आपको आवश्यकता पड़ेगी, उपयोगी हों। फिर भी, कष्ट उठाने से सम्बन्धित इस मार्गदर्शिका में, मुझे आपको सचेत करना होगा कि इस विषय पर कि कष्टों का सामना कैसे करें, मैं जो कुछ भी कहूँ, वह सब व्यर्थ हो जाएगा, यदि आप यह नहीं जानते कि परमेश्वर कौन है और जीवन के सबसे कष्टदायी अनुभवों में वह क्या भूमिका निभाता है। अतः, जब आप अपने मार्गदर्शक या प्रशिक्षु के साथ इस मार्गदर्शिका का

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

अध्ययन करें, तो इस बारे में प्रश्न अवश्य पूछें कि कष्ट उठाते समय क्या करना है और कैसी प्रतिक्रिया देनी है। परन्तु इससे भी बढ़कर महत्वपूर्ण इस बारे में प्रश्न पूछना है कि आपका परमेश्वर कौन है और यीशु में उसने आपसे क्या प्रतिज्ञा की है। प्रश्नों की इस दूसरी पंक्ति के जो उत्तर आपको मिलेंगे, वे प्रश्नों की पहली पंक्ति के मेरे द्वारा दिए गए किसी भी उत्तर की तुलना में कहीं अधिक फलदायी सिद्ध होंगे। दोनों पंक्तियों के उत्तर आपस में जुड़े हुए होंगे और इस मार्गदर्शिका के चारों हिस्सों में मौजूद होंगे। मेरी यह प्रार्थना है कि जब आप आज कोई कष्ट उठाएँ या कल कोई कष्ट उठाने की तैयारी करें, तो यह आपको उपयोगी लगे।

अतः, जब जीवन बिखर जाता है, तब हम क्या करते हैं?

1

विलाप

1. विलाप क्या होता है?

आज के समय में विलाप शब्द का बहुत अधिक उपयोग नहीं होता। सच कहूँ तो, मैं शर्त लगा सकता हूँ कि अधिकांश लोगों को वास्तव में यह भी नहीं पता होगा कि विलाप होता क्या है। असल में, मेरे विचार से लोग यही जानते हैं कि विलाप किस भावना से सबसे निकटता से जुड़ा हुआ है—और वह भावना उदास होना है। परन्तु विलाप केवल एक भावना नहीं है; यह एक गतिविधि है। विलाप का अर्थ अपने दुःख और उदासी को प्रकट करना और उन्हें एक क्रम में रखना है। यह भावनात्मक संकट और पीड़ा को आवाज देता है और उन्हें एक क्रम में रखता है। यह मानना पड़ेगा कि विलाप की यह परिभाषा थोड़ी अमूर्त सी लगती है। वैसे भी, जब आप किसी गहरे संकट के समय में होते हैं, तो शायद ही किसी बात को क्रम में लगाने या व्यवस्थित करने का आपका मन करे, और उस बात के लिए तो बिलकुल भी नहीं, जिसकी वजह से वह संकट उत्पन्न हुआ हो।

हम जिस तरह से बातों को क्रम में लगाने के बारे में यहाँ बात कर रहे हैं, वह वैसा बिलकुल भी नहीं है, जैसा आप अपनी अलमारी या रसोई या औजारों के बक्से के साथ तब करते हैं, जब वे अस्त-व्यस्त हो जाते हैं—कम से कम यह पूरी तरह से वैसा तो बिलकुल भी नहीं है। ऐसा नहीं है कि विलाप करने के लिए आपको दुःख के हर कारक को श्रेणीबद्ध करना होगा और प्राथमिकता के क्रम में उसका विश्लेषण करना होगा। इसके बजाय, विलाप का अर्थ बाहर निकलने के द्वारा उसे एक क्रम देना है। ऐसा तब होता है, जब आप दुःख की गहराई में पहुँच जाते हैं और उसे बोलकर बाहर निकाल देते हैं—इसका अर्थ है कि आप ऊँची आवाज में बोलकर बताते हैं कि वह दुःख क्या है और आप उसके बारे में कैसा महसूस करते हैं।

अब, जो आप कहते हैं, वह आपके द्वारा अनुभव किए जा रहे दुःख की गम्भीरता या उसके प्रकार के आधार पर बहुत अलग हो सकता है। क्या आपने कभी कोई ऐसा नुकसान उठाया

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

है या इतनी गहरी उदासी महसूस की है कि ऐसा लगा हो कि आप बोलने के बजाय केवल रो ही सकते हैं? मैंने ऐसा किया है। कई बार, विलाप का अर्थ वह सब कुछ कह देना होता है, जो कहा जा सकता है। और आप ऐसा तब करते हैं, जब आपके द्वारा अनुभव की जा रही उदासी के बारे में आप लगातार कई पन्ने लिखते चले जाते हैं। आप ऐसा यात्रा के मार्ग में भी करते हैं, जहाँ कई घण्टों तक केवल आप और गाड़ी का शीशा होता है, और तब पर भी, वे घण्टे भी उस परिस्थिति से बाहर निकलने के लिए पर्याप्त नहीं लगते।

अतः, विलाप का अर्थ बाहर निकलने के द्वारा उसे एक क्रम देना है, जिसमें अपने दुःख को बोलकर छोड़ देना शामिल है। इसका अर्थ उसे दिशा देने के द्वारा क्रम में रखना भी है। इससे मेरा अर्थ यह है कि विलाप के साथ अक्सर यह व्यक्त की गई इच्छा भी जुड़ी होती है कि बातें किस तरह बेहतर हो सकती हैं। “काश, ऐसा कभी हुआ ही न होता...” “काश, मैं उसे वापस ला पाता...” “काश, मैं कुछ अलग होता...” और मेरे विचार से हम सभी ने कभी न कभी इस तरह के “काश” वाले वाक्य कहे हैं। हम उस बात का शोक मनाते हैं, जो है या जो नहीं है, और हम चाहते हैं कि वह कुछ और ही हो जाए। किसी को भी हमें ऐसा करना सिखाना नहीं पड़ता; यह स्वाभाविक रूप से हो जाता है। हमें अक्सर विलाप करना याद नहीं रखना पड़ता; जब भी कोई मुसीबत आती है, तो हम बस ऐसा करने लगते हैं।

2. विलाप सहायक कैसे है?

विलाप के सबसे सटीक उदाहरणों में से एक बाइबल में अय्यूब की पुस्तक में मिलता है। यदि आपका पालन-पोषण कलीसिया में हुआ है, तो सम्भव है कि आपने अय्यूब के बारे में सुना होगा। अय्यूब की पुस्तक के पहले दो अध्यायों से हमें मालूम होता है कि अय्यूब एक बहुत बड़े परिवार वाला धनी व्यक्ति था। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर की दृष्टि में अय्यूब एक खरा व्यक्ति था। वह परमेश्वर पर भरोसा रखता था और अपने हर काम में परमेश्वर की सेवा करने का प्रयत्न करता था। और हैरानी की बात यह है कि अपने इसी नेक चरित्र के कारण अय्यूब को ऐसा अकल्पनीय नुकसान झेलना पड़ा था। शैतान के हाथों में, परमेश्वर की अनुमति पर ही अय्यूब से उसकी हर एक वस्तु छीन ली गई, कि यह साबित हो कि अय्यूब परमेश्वर की निन्दा करने से इन्कार कर देगा। इस परीक्षा में, अय्यूब ने अपनी सारी धन-सम्पत्ति खो दी। और इससे भी बुरी बात यह हुई कि एक भयानक तूफान में उसने अपने बच्चों को खो दिया, जिसमें उनके सिरों पर छत गिर गई। यहाँ तक कि शैतान को

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

अनुमति दी गई कि वह अय्यूब को शारीरिक पीड़ा पहुँचाए, जिसके कारण अय्यूब के सिर से लेकर पाँव तक पूरे शरीर पर, पीड़ादायी फोड़े निकल आए। यदि कोई यह कह पाए कि उसका जीवन बिखर गया है, तो वह अय्यूब ही था।

इतने बड़े नुकसान के विषय में अय्यूब की क्या प्रतिक्रिया थी? वह सात दिन और सात रात तक चुपचाप भूमि पर बैठा रहा, जबकि उसके मित्र उसे देखते रहे, और उनके पास इस बात का कोई समाधान नहीं था कि उसकी पीड़ा कम करने के लिए वे क्या करें (अय्यूब 2:13)। एक सप्ताह तक चुपचाप दुःख उठाने के बाद, अय्यूब बोल उठा, और उसने जो कहा वह एक डरावना विलाप था। उसके पहले शब्द ये थे: “वह दिन जल जाए जिसमें मैं उत्पन्न हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, ‘बेटे का गर्भ रहा’” (अय्यू. 3:1)। बाद में उसी अकेलेपन की कहानी में, अय्यूब पूछता है, “मैं गर्भ ही में क्यों न मर गया? पेट से निकलते ही मेरा प्राण क्यों न छूटा?” (अय्यू. 3:11)। और फिर अय्यूब पूछता है, “दुःखियों को उजियाला, और उदास मनवालों को जीवन क्यों दिया जाता है? वे मृत्यु की बाट जोहते हैं पर वह आती नहीं...” (अय्यू. 3:20-21अ)।

जन्म के समय मर जाना अय्यूब के लिए लम्बा जीवन जीने से बेहतर होता, क्योंकि ऐसा होने से वह दुःख उठाने से बच जाता। ऐसा नहीं है कि मृत्यु आमतौर पर जीवन से बेहतर होती है, बल्कि वह मृत्यु अय्यूब के उस जीवन से बेहतर होती, जो पूरी तरह से असहनीय हो गया था। ऐसी बहुत सी बातें हैं, जिन्हें हम परमेश्वर और दुःख और अय्यूब के बारे में कह सकते हैं, परन्तु अभी के लिए तो हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि अय्यूब का विलाप हमें आमतौर पर विलाप करने के बारे में क्या सिखाता है।

जब जीवन बिखर जाए, तो अय्यूब का उदाहरण प्रतिक्रिया देने के लिए विलाप को एक अच्छे पहले कदम के रूप में हमें देखने में सहायता करता है। दुःख से भटकाव और उथल-पुथल उत्पन्न होता है। चाहे हम अपनी भावनाओं को अपने शब्दों से समझाने का कितना भी प्रयास क्यों न कर लें, कभी-कभी हमारे शब्द सब कुछ बताने में सफल नहीं हो पाते। और तब पर भी, हमारे शब्द हमें आगे बढ़ने में, समझने में, या कम से कम जो बात है, उसे स्वीकार करने में सहायता करते हैं। अय्यूब के मामले में, उसे कुछ भी कह पाने की तैयारी करने में एक सप्ताह की चुप्पी का समय लगा, और जो बात उसने कही वह बिलकुल भी समझदारी वाली बात नहीं थी। अब अय्यूब 3 अध्याय पढ़िए। वह चाहता था कि सारी प्राकृतिक व्यवस्था

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

विरोध करके उसके जन्म को रोक देती! विलाप को हमेशा समझदारी भरा नहीं होना चाहिए, क्योंकि विलाप वह स्थान नहीं है, जहाँ उस प्रक्रिया का अन्त होता है, बल्कि यह वह स्थान है, जहाँ से यह प्रक्रिया आरम्भ होती है। जब आप अपने नुकसान का दुःख मनाते हैं और अपनी पीड़ा के विषय में प्रतिक्रिया देते हैं, तो आप हमेशा विलाप करने की स्थिति में नहीं रहना चाहते। इसके बजाय, जो हुआ है, आप उसे अन्त में स्वीकार करना चाहते हैं, और उसमें प्रभु के प्रावधान पर भरोसा करना चाहते हैं, और अपने दुःख से आप जो सीखते हैं, उसके द्वारा दूसरों को यीशु के पीछे हो लेने में सहायता करना चाहते हैं। विलाप इन सभी बातों को ओर ले जाता है।

यह संसार सच्चे विलाप के कई विकल्प देता है। शीशी में बंद कर लेने वाला तरीका इनमें से एक है, जो कहता है कि यदि आप पीड़ा को अनदेखा करें, तो वह अन्त में चली जाएगी। परन्तु समय सभी घावों को चंगा नहीं करता, और निश्चित रूप से वह सभी घावों को ठीक से चंगा नहीं करता। जैसे टूटी हुई हड्डी को ठीक न करने से लंगड़ाकर चलना पड़ सकता है, वैसे ही पीड़ा को शीशी में बंद कर लेने से आपके जीवन में और प्रभु के साथ आपके चलने में समस्याएँ उत्पन्न होती रहेंगी।

स्वयं को भटकाना विलाप का एक और विकल्प है, जो कहता है कि यदि आप बस दूसरी सुख-सुविधाओं के पीछे लगे रहें या स्वयं को काम में झोंक दें, तो दुःख आखिरकार दब जाएगा। बहुत अधिक टूटपन की एक लम्बी रेखा इस तरीके से जुड़ी होती है। दुःख भी अक्सर एक आक्रमणकारी की तरह काम करता है, जो बिना किसी चेतावनी के आक्रमण करने को तैयार रहता है। दुःख से बचने के लिए, आप अक्सर स्वयं को भटकाने वाली बातों में और भी अधिक गहराई तक डुबोते चले जाते हैं, जब तक कि अन्त में वही भटकाव पलटकर आपको चोट न पहुँचा दे। आप केवल एक सीमा तक ही नशीले पदार्थों, यौन सम्बन्धों, जुआ खेलने, लगातार सामान खरीदने, अत्यधिक काम करने या किसी भी अन्य भटकाव का पीछे जा सकते हैं, इससे पहले कि एक समय ऐसा आए, जब आप उस भटकाव और अपने दुःख के फँस जाएँ। और इन दोनों में से कोई एक ही जीतेगा।

अपने दुःख को शीशी में बंद करके न रखें। जब तक वह चला न जाए, तब तक अपना ध्यान भटकाने का प्रयास मत करो। इसके बजाय, विलाप करो।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

3. परमेश्वर हमारे विलाप को कैसे समझता है?

हे मेरे मित्रों, हमें अपने विलाप उसके पास लाने के लिए परमेश्वर बुलाता है। हमारे अपने टूटेपन और हमारे आसपास के टूटेपन पर हमारा विलाप उसे भयभीत या क्रोधित नहीं करता। इसके बजाय, वह हमें वैसे ही अपनाता है, जैसे एक भला पिता अपने दुःखी बच्चे के साथ करता है। यीशु की शिक्षा का एक सबसे अच्छा भाग तब घटित होता है, जब वह कहता है, “हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा” (मत्ती 11:28)। कुछ मायनों में, उसके “आओ” के बुलावे में ही विलाप लिपटा हुआ है। क्या आपके पास ऐसे बोझ और दुःख हैं, जिन्हें उठाना बहुत भारी लगता है? आपको यीशु के पास आना चाहिए। वह आपसे निराश नहीं होगा या आपको दूर नहीं करेगा। इसके बजाय, वह आपको विश्राम देगा।

यह दुःख की बात है कि बहुत से मसीही इस विचार में रहते हैं कि परमेश्वर विलाप को पसन्द नहीं करता। परन्तु बाइबल विलाप के उदाहरणों से भरी पड़ी है। बाइबल में तो एक पूरी पुस्तक का नाम ही *विलापीगीत* है! अब भजन संहिता को ही देख लीजिए—लगभग आधे भजन (लगभग 65 या उससे अधिक) परमेश्वर के सामने किए गए विलाप ही हैं।

मेरे विचार से इसके दो कारण हैं: एक कारण व्यक्तिगत है और दूसरा सामूहिक। व्यक्तिगत रूप से, मसीहियों को ऐसा लग सकता है कि प्रभु पर भरोसा रखना, उनकी पीड़ा के हिसाब से विलाप करने के साथ मेल नहीं खाता। “यदि मेरे जीवन की हर छोटी-बड़ी बात पर प्रभु अधिकार रखता है (जो कि सत्य है!), तो मुझे बस अपने दाँत भीचकर उसके अच्छे उद्देश्यों पर भरोसा रखना चाहिए, और इस बात से निराश नहीं होना चाहिए कि इससे अभी मुझे कितनी पीड़ा हो रही है!” हाँ, परमेश्वर अधिकार रखता है। और हाँ, परमेश्वर ठीक-ठीक जानता है कि हमें दुःख उठाने की अनुमति देकर उसे क्या हासिल होगा।

परन्तु दुःख पर उसका अधिकार होने का अर्थ यह नहीं है कि जब हम उसके सामने अपना दुःख प्रकट करते हैं, तो वह हमारे प्रति ठण्डा या अधीर हो जाता है। भजन संहिता 103 में राजा दाऊद लिखता है, “जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है। क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है, और उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है” (भज. 103:13-14)। शायद परमेश्वर जानता हो कि अन्त में हमारे दुःख का क्या अर्थ निकलेगा, परन्तु वह यह भी जानता है कि इस समय हमें भी वह बात पता

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

नहीं है। वह जानता है कि हम पूरी तस्वीर नहीं देख सकते। इस कारण, जब हम अपने विश्वास के लिए संघर्ष कर रहे हों, तब भी उसके सामने अपना दुःख प्रकट करने के लिए वह हमें बुलाता है। अतः, परमेश्वर के सामने विलाप करने में लज्जा महसूस न करें। दुःख उठाने के विषय में आपकी उदासी आपके विश्वास के विरोध में नहीं है।

मेरे विचार से मसीहियों का विलाप करना भूल जाने का एक और कारण यह है कि कलीसियाओं ने भी प्रभु के दिन पर विलाप करना छोड़ दिया है। बहुत सी मसीही आराधना सभाएँ अविश्वासियों को ध्यान में रखकर आयोजित की जाती हैं, या ऐसे लोगों को जो केवल ऊपरी तौर पर मसीही धर्म तक ही सीमित रहते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे सभाएँ तो बहुत ही जोशीली और उत्साह से भरी हुईं तो होती हैं, परन्तु उनमें विलाप के लिए कोई जगह नहीं होती। जिस तरह कलीसियाओं को प्रार्थनाएँ करनी चाहिए, और पाप का अंगीकार एवं परमेश्वर की स्तुति के गीत गाने चाहिए, उसी तरह उन्हें विलाप भी करना चाहिए। मेरी कलीसिया में, हम नियमित रूप से विलाप की प्रार्थना करते हैं, और उसके बाद एक ऐसा गीत गाते हैं, जो इस बात पर जोर देता है कि परमेश्वर अपने लोगों को सांत्वना देता है। समय के साथ, मैंने विलाप की प्रार्थनाएँ करना सीख लिया है, और यह मैंने उन लोगों को सुनकर और उनके साथ प्रार्थना करके सीखा है, जिन्होंने हमारी रविवार सुबह की सभाओं के दौरान इन प्रार्थनाओं में अगुवाई की थी। यदि आपकी कलीसिया विलाप करना भूल गई है, तो सम्भव है कि आपके साथी सदस्य भी इस भूल जाने की परीक्षा में पड़ जाएँ।

विलाप करने का अर्थ केवल बोलकर अपनी बात बताना नहीं है, यद्यपि यह उससे कम भी नहीं है। विलाप करने का अर्थ अपने बोझों को उस परमेश्वर के पास ले जाना है, जो हमारी सुनता है और हमारी चिन्ता करता है। भजन 42 में दाऊद विलाप करते हुए कहता है: “मेरे आँसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं; और लोग दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है?... हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा” (भज. 42:3, 5)। विलाप हमें याद दिलाता है कि हमारा उद्धार परमेश्वर ही है, और वह हमें कभी निराश नहीं करेगा।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

मनन के लिए प्रश्न:

1. क्या आपको विलाप करना कठिन लगता है? ऐसा क्यों है या ऐसा क्यों नहीं है?
2. विलाप करना आपको परमेश्वर के सामने अपने दुःख को समझाने में कैसे सहायता कर सकता है?
3. भजन संहिता 3, 13, 32, और 44 को पढ़ें। विलाप के इन गीतों में कौन सी बात आपको सबसे अलग लगी?
4. क्या आपने कभी पीड़ा को अनदेखा करने या उससे अपना ध्यान भटकाने जैसा कोई विकल्प आजमाया है? वह तरीका कितना कार्यशील रहा?

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

2

जानें कि परमेश्वर कौन है

अतः, जब ऐसा महसूस हो कि जीवन बिखर रहा है, तो हमें विलाप करना चाहिए। और हमें यह भी याद रखना चाहिए कि परमेश्वर कौन है। परमेश्वर अधिकार रखता है, वह न्यायी और उद्धारकर्ता है।

1. परमेश्वर अधिकार रखता है

अपनी किशोरावस्था में जब मैं यीशु के पीछे हो लेने का प्रयास कर रहा था, तो मुझे यह समझने में कठिनाई हुई कि परमेश्वर पाप और दुःख से भरे इस संसार पर अधिकार कैसे रख सकता है। सच कहूँ तो मुझे आज भी इस विचार को समझने में कठिनाई होती है, परन्तु अब वैसी कठिनाई नहीं होती, जैसी पहले होती थी। आप देखिए कि पहले मुझे यह पता नहीं था कि परमेश्वर का अधिकार रखना बाइबल में कितना व्यापक है। मेरे विचार से शायद मैंने यह मान लिया था कि परमेश्वर के अधिकार रखने को लेकर बाइबल भी उतनी ही शर्मिदा थी, जितना मैं था। वैसे भी, हम यह कैसे सोच सकते हैं कि परमेश्वर किसी न किसी तरह इस संसार और हमारे जीवन में होने वाली इतनी सारी भयानक बातों पर अधिकार रखता है? निश्चित रूप से, ये बातें तो बस पाप का परिणाम हैं और इनका परमेश्वर से कोई लेना-देना नहीं है, सही है न? वैसे... हाँ भी और नहीं भी।

यह बात सच है कि पाप का परिणाम दुःख होता है। पौलुस ने रोमियों को लिखा, “इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया” (रोमि. 5:12)। अतः, एक अर्थ में कहें तो हम मानवीय दुःख को, जो मृत्यु का ही एक रूप है, मानवीय कामों का परिणाम— अर्थात्, परमेश्वर के विरुद्ध किया गया पाप मान सकते हैं।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

हालाँकि, दूसरे अर्थ में हमें पवित्रशास्त्र के साथ यह मानना होगा कि परमेश्वर पाप और दुःख पर भी अधिकार रखता है। मेरे लिए इस बात का पूरी तरह से बचाव करना इस मार्गदर्शिका की सीमाओं से कहीं बाहर होगा। परन्तु मैं आपको दो ऐसे सबूत देना चाहता हूँ, जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर वास्तव में हर बात पर अधिकार रखता है—जिसमें पाप और दुःख भी शामिल हैं। पहला सबूत, यीशु का क्रूस है। यीशु का क्रूस किस बात की प्रतिक्रिया में था? वह हमारे पाप की प्रतिक्रिया में था। फिर से, रोमियों 5 में पौलुस यह स्पष्ट करता है कि जिस तरह आदम के द्वारा इस संसार में पाप आया (उत्प. 3), उसी तरह मसीह के जीवन और क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा जीवन आता है (रोमि. 5:19)। और क्रूस पर मसीह की मृत्यु परमेश्वर की कोई अलग योजना नहीं थी, जिसे आदम के पाप के विषय में एक आपातकालीन प्रतिक्रिया के रूप में अपनाया गया हो। इसके बजाय, लूका लिखता है, “उसी यीशु को, जो परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तुम ने अधर्मियों के हाथ से क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला” (प्रेरि. 2:23)। अतः, इस संसार की उत्पत्ति से पहले ही, परमेश्वर ने पापियों के निमित्त अपने एकलौते पुत्र, प्रभु यीशु को बलिदान करने का सोच लिया था, जिसका अर्थ यह था कि पाप इस संसार में आएगा।

दूसरा सबूत, परमेश्वर का वचन नियमित रूप से सिखाता है कि परमेश्वर पाप और दुःख पर अधिकार रखता है। यह बात अय्यूब की पुस्तक में सबसे अधिक स्पष्ट दिखाई देती है। जैसा कि ज्ञात है कि जब अय्यूब ने हर वह वस्तु खो दी, जो उसकी जानकारी में थी और उसे प्रिय थी, तो परमेश्वर को धन्य कहते हुए वह बोला, “मैं अपनी माँ के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊँगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया...” (अय्यू. 1:21)। परन्तु हे अय्यूब, थोड़ा रुको, क्या यह शैतान नहीं था, जिसने तुम्हें ये सारे दुःख दिए? वैसे, अय्यूब को परमेश्वर और शैतान के बीच हुई उस बातचीत के बारे में पता नहीं था, जिससे उसे ये नुकसान उठाने पड़े थे। और तब पर भी, उस पूरी पुस्तक में, अय्यूब इस बात पर अड़ा रहा कि उसे शैतान से नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर से इसका कारण जानना है। और अन्त में जब परमेश्वर ने अय्यूब की विनती का उत्तर दिया, तो उसने मृत्यु और शैतान समेत सारी सृष्टि पर, परमेश्वर के सम्पूर्ण अधिकार पर बड़ी प्रसन्नता से जोर दिया (अय्यू. 38-41 में अलौकिक बातचीत को देखें)। अय्यूब ने यह कहते हुए अपने दुःखों पर परमेश्वर के अधिकार के विषय में प्रतिक्रिया दी, “मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती। तू ने पूछा, ‘तू कौन है जो ज्ञानरहित होकर युक्ति पर परदा डालता है?’

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

परन्तु मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात् जो बातें मेरे लिये अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था” (अय्यू. 42:2-3)। न तो अय्यूब ने और न ही परमेश्वर ने इस सच्चाई से मुँह मोड़ा कि शैतान केवल परमेश्वर के ही अधीन है। अय्यूब के दुःख और उसकी बहाली इस बात का स्पष्ट सबूत है कि जीवन की सबसे कठिन बातों पर भी परमेश्वर अधिकार रखता है।

यह बात मायने क्यों रखती है? एक तो यह इसलिए मायने रखती है, क्योंकि परमेश्वर का अधिकार रखना ही हमारी जीत का आश्वासन देता है। कल्पना कीजिए कि जब आपका जीवन बिखर गया था, उस समय यदि परमेश्वर का उस पर कोई अधिकार न होता... तो आपकी उस विपत्ति के लिए कौन जिम्मेदार होता? अन्त में आपकी उस परीक्षा को किसने मंजूरी दी थी, और किस योजना के अधीन आपकी वह परीक्षा हुई थी? हे मेरे मित्र, परमेश्वर भला है और वह अधिकार रखता है और, जैसा अय्यूब ने माना था, उसकी कोई योजना विफल नहीं हो सकती। आप ऐसा देवता नहीं चाहेंगे, जिसे कोई हरा सके। आप ऐसा देवता नहीं चाहेंगे जिसे किसी और को उत्तर देना पड़े। आप तो एक ऐसा सर्वोपरि और अधिकार रखने वाला परमेश्वर चाहते हैं, जो अपनी इच्छा के लिए हर वस्तु को काम में लाता हो।

2. परमेश्वर भला है

साम्राज्य की एक चिन्ता यह होती है कि सम्राट भला है या बुरा। आप देखिए कि एक बुरे राजा के हाथ में पूरी सत्ता होना उन सभी लोगों के लिए खतरनाक होता है, जो उसके अधीन रहते हैं। परमेश्वर कोई दुष्ट राजा नहीं है। असल में, उसमें कोई अशुद्धता नहीं पाई जाती। मूसा ने परमेश्वर के बारे में कहा, “वह चट्टान है, उसका काम खरा है; और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा ईश्वर है, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है” (व्यव. 32:4)। इससे भी बढ़कर बात यह है कि उसके जैसा कोई और प्राणी नहीं है। केवल परमेश्वर ही नैतिक भलाई को इसलिए परिभाषित करता है, क्योंकि केवल वही नैतिक रूप से सिद्ध है। जब हम कहते हैं कि परमेश्वर पवित्र है, तो हमारे कहने का एक अर्थ यही होता है। हम यह बताना चाहते हैं कि नैतिक सिद्धता और, जैसा हमने पिछले भाग में सीखा था, पूरी सत्ता के मामले में परमेश्वर पूर्ण रीति से एकमात्र है। इसी कारण हमें परमेश्वर के अधिकार रखने से डरने की आवश्यकता नहीं है, कि मानो वह अपनी शक्ति का उपयोग कभी कुछ ऐसा करने के लिए करेगा, जो सही नहीं है।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

जब आपका जीवन बिखर जाता है, तो हो सकता है कि आप यह सोचने की परीक्षा में पड़ जाओ कि परमेश्वर अपने अधिकार रखने की सामर्थ्य का उपयोग आपके विरुद्ध बुराई करने के लिए कर रहा है। हे मेरे मित्र, परमेश्वर अधिकार रखता है और वह भला है। वह कोई बुरा काम नहीं करता। हो सकता है कि आपका दुःख आपके पाप या दूसरों के पापों का परिणाम हो, परन्तु यह कभी भी परमेश्वर के पाप का परिणाम नहीं होता, क्योंकि वह पाप नहीं करता। जब आप भंवर में फँस जाओ और आपका जीवन अस्त-व्यस्त हो जाए, तो आपको यह अवश्य जानना चाहिए कि परमेश्वर भला है। यह एक ऐसा सच है जिस पर आपको शायद सबसे अधिक सन्देह हो या जिसका आप इन्कार करते हों, परन्तु यह एक ऐसा सच है, जिसका शिक्षा बाइबल बार-बार देती है।

हाल ही में मुझे एक ऐसे व्यक्ति के साथ सुसमाचार साझा करने का मौका मिला, जो ईश्वर को नहीं मानता और, जिसने पहले यीशु पर विश्वास किया था, परन्तु बाद में उसने अपना विश्वास इसलिए छोड़ दिया, क्योंकि वह यह समझ नहीं पा रहा था कि पुराने नियम में परमेश्वर ने इतनी अधिक मृत्यु और लहू बहाने की अनुमति कैसे दे दी। उसने जिन मुख्य उदाहरणों का उल्लेख किया, उनमें से एक नूह और उसके जहाज की कहानी थी। मेरे मित्र ने पूछा, “परमेश्वर ने पूरी पृथ्वी पर जलप्रलय कैसे ला दिया, जबकि वह तो निर्दोष लोगों से भरी हुई थी?” मैंने उससे कहा, “पेरी, असली समस्या इस निर्दोष शब्द के साथ ही है। कोई भी मनुष्य निर्दोष नहीं है। परमेश्वर के विपरीत, हम लोग नैतिक रूप से कमजोर हैं। हम उनसे प्रेम नहीं करते, जिनसे हमें प्रेम करना चाहिए, और हम उनसे प्रेम करते हैं, जिनसे हमें प्रेम नहीं करना चाहिए। इस बात के इतना बड़ा मुद्दा होने का कारण यह है कि परमेश्वर असीम रूप से भला है। वह थोड़ा सा खरा नहीं है; वह हमेशा खरा है। और हमने उसे नाराज किया है। मानवता पर उसका निर्णय इसलिए सही है, क्योंकि वह सही है और हम गलत हैं।” काश मैं यह बता पाता कि पेरी ने उस दिन मेरी बात मान ली थी, परन्तु ऐसा नहीं हुआ था।

वह दिन आएगा, जब मैं, पैरी, और आप, हम सब इस नैतिक रूप से सिद्ध परमेश्वर के सामने खड़े होंगे और इस बात का उत्तर देंगे कि हमने अपना जीवन कैसे जिया। आपके विचार से जब आप उसकी भलाई का सामना करेंगे और अपने आपको भलाई से बिलकुल विपरीत पाओगे, उस समय आप क्या कहेंगे? अपने पापों पर परमेश्वर के भले न्याय से सुरक्षित रहने के लिए, आपको यीशु पर भरोसा रखना होगा। आप देखिए कि परमेश्वर ने उन सभी लोगों

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

के पापों के विरुद्ध अपना क्रोध यीशु पर उतारा, जो अपने पापों से फिरकर उस पर भरोसा रखेंगे। यदि आप यीशु पर भरोसा रखते हो, तो आपको न्याय का सामना नहीं करना पड़ेगा, इसके बजाय आपको परमेश्वर की भलाई मिलेगी, जो मसीह में आपके लिए है।

3. परमेश्वर ने उन लोगों से भलाई की प्रतिज्ञा की है, जो यीशु पर भरोसा रखते हैं

अक्सर कॉफी के कप्स, पेन्स और टी-शर्ट्स पर रोमियों 8:28 छपा हुआ मिलता है। इस वचन की लोकप्रियता का एक ठोस कारण है। पौलुस ने रोमियों को लिखा, “हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं” (रोमि. 8:28)। सब बातें?! हाँ, सब बातें। इसमें वे बातें भी शामिल हैं, जिनके कारण मुझे लगा कि मेरा जीवन बिखर रहा है? हाँ, इसमें वे बातें भी हैं। परमेश्वर ने हर उस व्यक्ति के लिए स्वर्गीय भलाई की प्रतिज्ञा की है, जो उससे प्रेम करता है। उसने सब बातों में उनकी भलाई उत्पन्न करने की प्रतिज्ञा की है, जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं।

मेरी पत्नी और मैंने वर्षों तक बच्चों के लिए प्रार्थना की, परन्तु ऐसा लगा कि मानो परमेश्वर सुन ही नहीं रहा था। हमें “अस्पष्ट बांझपन” की समस्या बताई गई, जिसका अर्थ है कि जहाँ तक डॉक्टर देख सकते हैं, उन्हें ऐसा कोई कारण नहीं मिला कि हमें बच्चे उत्पन्न कर पाने में सक्षम क्यों नहीं होना चाहिए। और तब पर भी, हम निःसन्तान थे।

फिर, एक दिन, मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि वह गर्भ से है। और ऐसा लगा कि मानो आखिरकार स्वर्ग ने हमारी कई प्रार्थनाएँ सुन ली हों और उनका उत्तर दे दिया हो। हमारा अपना एक परिवार होने वाला था। हमने पहाड़ों की चोटियों से प्रभु की स्तुति की। हमने अपने परिवारों को बताया। हम एक घर से दूसरे घर में चले गए, जिससे कि हम अपने बच्चे के आने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकें।

कुछ ही सप्ताहों के बाद, अपनी पत्नी का हाथ अपने हाथ में थामकर बैठे हुए, हमें वह भयानक समाचार मिला कि हमारा बच्चा बच नहीं सका। उसकी पकड़ मेरे हाथ पर और कस गई। कमरे की सारी हवा जैसे बाहर निकल गई। चिकित्सक अपनी संवेदनाएँ व्यक्त करके और हमें कुछ एकांत समय देने के लिए कमरे से बाहर चला गया। जब उसके पीछे दरवाजा बंद

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

हुआ, तो मेरी पत्नी जोर-जोर से रोने लगी। अभी जब मैं आपको यह सब बता रहा हूँ, तो उस नन्हे-मुन्ने को खोने की वह गहरी उदासी मेरे मन में फिर से उमड़ आई है।

ऐसा लगा कि हमारे जीवन बिखर गए। हमारा वह परमेश्वर कहाँ था, जिसने प्रतिज्ञा की थी कि सब बातें मिलकर हमारे लिए काम करेंगी? हम उससे प्रेम करते थे, है न? हम उसकी सेवा करने के लिए समर्पित थे! क्या वह इतने समय से हमारे साथ खेल रहा था? क्या वह हमारी प्रार्थनाएँ सुन रहा था, परन्तु केवल कौतुहल बढ़ाने के लिए उत्तर देने में विलम्ब कर रहा था, जिससे कि वह हमें बच्चा दे और फिर कुछ ही महीनों बाद उसे हमसे वापस छीन ले? यही वे प्रश्न थे, जिन्हें हम पूछ रहे थे। यही वह दुःख था, जिसके पर हम विलाप कर रहे थे।

मेरी पत्नी और मेरे अब पाँच बच्चे हैं, जिन्हें हमने सन् 2023 में गोद लिया था। वे बहुत प्यारे हैं, और उनके मम्मी-पापा बनकर हम अत्यन्त प्रसन्न हैं। जब मैं हमारे बांझपन और नुकसान के दिनों को याद करता हूँ, तो मैं प्रभु की स्तुति करने लगता हूँ, क्योंकि, भले ही मुझे नहीं पता था कि वह सब बातों में हमारी भलाई को (और हमारे बच्चों की भलाई को) कैसे उत्पन्न करेगा, परन्तु परमेश्वर ने ऐसा ही किया। उसने हमसे की गई अपनी प्रतिज्ञा को नहीं तोड़ा। वह हमारे जीवन को हमारे बच्चों के जीवनो से जोड़ने के लिए व्यवस्थित कर रहा था। वह हमारी बुद्धि के अनुसार नहीं, परन्तु अपनी बुद्धि के अनुसार हमारे परिवार को एक साथ जोड़ रहा था।

यदि आप परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं, तो आपके पास उसका व्यक्तिगत आश्वासन है कि वह आपकी भलाई के लिए सब बातों को काम पर लगा रहा है। अब, “भलाई” का क्या अर्थ है, यह निर्धारित करना उसी का काम है। यद्यपि आप इस बात पर पूरा भरोसा कर सकते हैं कि—परमेश्वर की भलाई आपके लिए उसके साथ उसके आनन्द में अनन्तकाल में होने से कम नहीं है। परमेश्वर ने यहाँ आपके जीवन में काम करने की प्रतिज्ञा की है, जिससे कि आप वहाँ उसके साथ अनन्तकाल में रह सकें। आपका जीवन बिखर जाएगा। आपको दुःख उठाना पड़ेगा। परन्तु परमेश्वर इन सबका उपयोग अपनी महिमा और आपकी भलाई के लिए ही करेगा।

कोरी टेन बूम ने “माई लाइफ इज बट ए वीविंग” (मेरा जीवन और कुछ नहीं बस एक बुनाई है) नामक कविता लिखी थी। दुःख के समय में, मैं जितनी बार उनके शब्दों को याद करता हूँ, उतनी बार तो बता भी नहीं सकता। वह लिखती हैं:

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

मेरा जीवन और कुछ नहीं बस एक बुनाई है,
मेरे और मेरे परमेश्वर के बीच ।
मैं रंग नहीं चुन सकती और
वह लगातार बुनता जाता है ।

अक्सर वह दुःख बुनता है;
और मैं मूर्खतापूर्ण घमण्ड में
भूल जाती हूँ कि वह ऊपरी भाग देखता है
और मैं अन्दरूनी भाग देखती हूँ

जब तक करघा शान्त नहीं हो जाता,
और बुनाई की नलियाँ आगे-पीछे होना बंद नहीं कर देती
क्या परमेश्वर वह परदा हटाएगा
और उसका कारण बताएगा कि ऐसा क्यों किया ।

गहरे रंग के धागे भी उतने ही आवश्यक हैं
बुनने वाले के कुशल हाथों में
जितने कि सोने और चाँदी के धागे
जिस तरीके से उसने योजना बनाई है
वह जानता है, वह प्रेम करता है, वह चिन्ता करता है;
कोई भी बात इस सच्चाई को धुंधला नहीं कर सकती ।
वह उन लोगों को सबसे बेहतरीन वस्तुएँ देता है
जो चुनाव उसी पर छोड़ देते हैं ।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

मनन के लिए प्रश्न:

1. क्या आप अपने अधिकार रखने वाले, भले और उद्धारकर्ता परमेश्वर पर चुनाव छोड़ देंगे?
2. यह जानना कि परमेश्वर आपके दुःख पर भी नियंत्रण रखता है, आपको उसे सहने में कैसे सहायता करता है?
3. क्या दुःख उठाना आपको परमेश्वर की भलाई पर सन्देह करने के लिए प्रेरित करता है? ऐसा क्यों है?
4. यह जानकर आपको कैसी शान्ति मिलती है कि परमेश्वर ने सब बातों के मिलकर आपकी भलाई के लिए काम करने की प्रतिज्ञा की है?

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

3

परमेश्वर पर और दूसरों पर भरोसा रखना

सन् 2025 के जनवरी महीने में, मेरे माता-पिता का जीवन बिखर गया। इसका कारण क्या था? एक पेड़ उनके घर पर गिर गया। मैं किसी छोटी-सी टहनी या छोटे पौधे की बात नहीं कर रहा हूँ, समझ गए? वह 13,600 किलो का एक ओक का पेड़ था। मेहरबानी से छत को तोड़कर अन्दर घुसने से पहले वह चिमनी से टकरा गया। ठेकेदार ने कहा कि यदि वह पहले छत से टकराता, तो घर दो हिस्सों में बँट जाता और सीधे तहखाने में जा गिरता। इतना होने के बावजूद, उस पेड़ से हुआ नुकसान अभी ₹2,32,77,000 से अधिक का है। मेरे माता-पिता छह महीनों से अपने घर से बाहर हैं और उन्हें कोई अनुमान नहीं है कि मरम्मत का काम आखिरकार कब पूरा होगा, कि वे घर लौट सकें। उन्होंने बहुत दुःख उठाया है।

इतना दुःख उठाने के बावजूद, सहायता के लिए जैसे उन्होंने प्रभु पर और दूसरों पर भरोसा किया, उसे देखकर मुझे बहुत साहस मिला। उनके जीवन की इस परीक्षा ने उन्हें न तो निराश किया और न ही परमेश्वर की भलाई पर सन्देह करने के लिए प्रेरित किया। असल में, उन्होंने परमेश्वर के द्वारा उनसे की गई प्रतिज्ञाओं पर भरोसा किया और अपने लिए दूसरों को मसीह के हाथ और पाँव बनने का मौका दिया।

इस भाग में, मैं चाहता हूँ कि हम इस बारे में सोचें कि जब हमारा जीवन बिखरता हुआ महसूस हो, तो हम सहायता के लिए परमेश्वर और दूसरों पर कैसे भरोसा रख सकते हैं।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

1. परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखें

यीशु का पहाड़ी उपदेश सम्भवतः अब तक का सबसे मशहूर उपदेश है। यीशु ने अपने उस भाषण का समापन दो घरों के बीच तुलना करके किया: एक घर जो चट्टान पर बना था और दूसरा जो रेत पर बना था। दोनों ही घरों के मामले में, “मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं...” (मत्ती 7:25, 27)। हालाँकि, दोनों घरों के परिणाम बिलकुल अलग-अलग थे। चट्टान पर बना घर “नहीं गिरा,” बल्कि आँधी के सामने दृढ़ता से खड़ा रहा। दूसरी ओर, रेत पर बना घर न केवल गिर गया, बल्कि “वह गिरकर सत्यानाश हो गया” (मत्ती 7:27)। चट्टान पर बना घर कौन सा था? यीशु ने कहा कि यह घर उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है “जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है...” (मत्ती 7:24)।

तो, आप अपने बारे में क्या कहेंगे? आप अपना जीवन किस पर बनाएँगे? सच कहूँ तो, इसके विकल्प अनगिनत हैं। आप पैसा, प्रसिद्धि, शक्ति, लोकप्रियता, कौशल, परिवार, यौन सम्बन्ध, या ऐसी ढेरों दूसरी बातों पर बना सकते हैं। या, आप अपना घर उस चट्टान पर बना सकते हैं, जो परमेश्वर का वचन है। बिना किसी हिचकिचाहट के, यीशु कहता है कि यदि आप बाद वाला विकल्प चुनते हैं, तो आप एक “निर्बुद्धि मनुष्य” (या स्त्री) हैं (मत्ती 7:26)। ऐसा क्यों होगा?

वैसे, एक बात तो यह है कि विकल्पों की जो लम्बी सूची मैंने अभी आपको दी है, और जो विकल्प मैंने नहीं बताए, परन्तु आप उन्हें जोड़ना चाहेंगे, उन सबमें एक बात समान है—कि वे सभी क्षणभंगुर हैं। अच्छा, उनमें दो बातें समान हैं—कि वे क्षणभंगुर हैं और अन्त में वे आपकी सबसे गहरी इच्छाओं को सन्तुष्ट करने में विफल रहते हैं। परमेश्वर का वचन इन दोनों में से किसी भी आलोचना के दायरे में नहीं आता। यशायाह लिखता है, “जब यहोवा की साँस उस पर चलती है, तब घास सूख जाती है, और फूल मुर्झा जाता है; निःसन्देह प्रजा घास है। घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा” (यशा. 40:7-8)। आप देखिए कि इन दूसरे विकल्पों के विपरीत, परमेश्वर का वचन स्थायी है।

परमेश्वर का वचन पूरी तरह से सन्तुष्टि देने वाला भी है। यिर्मयाह लिखता है, “परन्तु जो घमण्ड करे वह इसी बात पर घमण्ड करे, कि वह मुझे जानता और समझता है, कि मैं ही वह यहोवा हूँ जो पृथ्वी पर करुणा, न्याय और धर्म के काम करता है; क्योंकि मैं इन्हीं बातों से प्रसन्न रहता हूँ” (यिर्म. 9:24)। आपकी धन-सम्पत्ति या प्रभाव घमण्ड करने योग्य नहीं हैं।

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

परमेश्वर को समझने और जानने के बेजोड़ महत्व की तुलना में ये सब बहुत ही तुच्छ हैं। आप परमेश्वर को और अधिक समझने और जानने में कैसे उन्नति कर सकते हैं? उसके वचन में समय बिताकर आप ऐसा कर सकते हैं।

यदि आपको परमेश्वर का वचन पढ़ने की आदत नहीं है, तो मैं आपको हर दिन कम से कम पंद्रह मिनट निकालकर कुछ अध्याय पढ़ने का सुझाव दूंगा। और पढ़ते समय, अपने आप से ये प्रश्न पूछें कि आप जो पढ़ रहे हैं, उसका परमेश्वर से, आप से और आपके आसपास के लोगों से क्या सम्बन्ध है। अपने आप से पूछें कि आप जो पढ़ रहे हैं, वह आपके जीवन पर कैसे लागू होता है। यदि किसी बात के अर्थ को लेकर आपके पास कोई प्रश्न है, तो उसे कहीं लिख लें और फिर अपने पास्टर से या मार्गदर्शक से उसे समझने में आपकी सहायता करने के लिए कहें। परमेश्वर के वचन में उसके साथ समय बिताने से बढ़कर कोई भी काम अधिक सार्थक नहीं है। जब आपका जीवन बिखरने लगे, तब आप पाएँगे कि यदि आपने परमेश्वर के वचन को सीखने और उसका पालन करने में समय बिताया है, तो आप उस धनी व्यक्ति के समान होंगे जिसका घर चट्टान पर बना हुआ है।

2. परमेश्वर की सहायता के लिए प्रार्थना करें

हाल ही में मैंने अपने छोटे समूह को याकूब की पुस्तक के अध्ययन में अगुवाई की। यद्यपि मैं लम्बे समय से परमेश्वर का वचन पढ़ता चला आ रहा हूँ, तौभी मैं इस बात से फिर से प्रभावित हुआ कि याकूब ने हमें प्रार्थना करने के तरीके के बारे में निर्देश देने में कितना साहस दिखाया। वह हमें याकूब 4:2 में बताता है, “तुम्हें इसलिये नहीं मिलता कि माँगते नहीं।” फिर याकूब 5:16 में, वह लिखता है, “धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।” इसका अनुवाद क्या होगा? प्रार्थना सचमुच एक बहुत बड़ी बात है।

जब आप ऐसी स्थिति में हों जहाँ आपको आपका जीवन बिखरता हुआ लगे, तो आपको प्रार्थना करनी चाहिए। मुझे मालूम है कि यह सुनने में आसान सा लगता है, परन्तु मैं इस बात में गम्भीर हूँ। आपको परमेश्वर की सहायता के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है। दाऊद लिखता है, “अपने संकट में मैं ने यहोवा परमेश्वर को पुकारा; मैं ने अपने परमेश्वर की दोहाई दी; और उसने अपने मन्दिर में से मेरी बातें सुनी; और मेरी दोहाई उसके पास पहुँचकर उसके कानों में पड़ी” (भज. 18:6)। आपकी दोहाई भी उसके कानों तक पहुँचेगी। अतः

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

जब आप संकट का सामना कर रहे हों, तो सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारें। यहाँ कुछ ऐसी बातें बताई गई हैं, जिसे आप उससे कह सकते हैं:

- कि आपके दुःख उठाने से परमेश्वर को महिमा मिले।
- कि आपके दुःख उठाने का उपयोग परमेश्वर आपके विश्वास को दृढ़ करने के लिए करे।
- कि दूसरे लोग आपका विश्वास देखकर आपके परमेश्वर पर विश्वास करें।
- कि आपको यह जानने की समझ मिले कि आपके सामने आने वाले अलग-अलग निर्णयों को कैसे सम्भालना है।
- कि परमेश्वर आपको शीघ्र ही आपके दुःख से बाहर निकाले।

3. परमेश्वर के लोगों पर भरोसा रखें

क्या आपको मेरे मम्मी-पापा की वह स्थिति याद है, जब एक पेड़ उनके घर पर गिर गया था? जिस तरह से उनकी कलीसिया के सदस्यों ने सचमुच हर कदम पर उनसे प्रेम किया, वह उस परीक्षा का सबसे साहस देने वाला पहलू रहा। लोगों ने उन्हें रहने के लिए घर, खाना, गिफ्ट कार्ड्स दिए, उस घर की साफ-सफाई में सहायता की और मरम्मत के लिए पैसे दिए। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि लोगों ने उनके साथ वचन बाँटा और उनकी ओर से परमेश्वर से प्रार्थना की। और सहायता लगातार आती रही।

क्या आप किसी ऐसी कलीसिया से जुड़े हुए हैं, जहाँ आपके साथी सदस्य आपके आत्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए समर्पित हैं? यदि नहीं, तो आपको ऐसा करना चाहिए। मसीही जीवन अकेले जीने के लिए नहीं बना है। मेरी बात पर विश्वास नहीं होता? जाकर पत्नियों को पढ़िए और स्वयं से पूछिए कि आप अकेले ही परमेश्वर की सभी आज्ञाओं का पालन कैसे करेंगे? “आपस में एक सा मन रखो” (रोमि. 12:16)। “एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो” (1 थिस्स. 5:11)। “जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे... एक दूसरे की सेवा में लगाए” (1 पत. 4:10)। मसीही जीवन के बारे में बाइबल की शिक्षा बस यही मानती है कि आप इसे दूसरों के साथ मिलकर जी रहे हैं। जब दुःख उठाने का समय आता है, तब आपको यह एहसास होता है कि आपके आत्मिक स्वास्थ्य के लिए दूसरे लोग सचमुच कितने आवश्यक हैं।

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

मुझे याद है कि एक बार मुझे अपने ही पाप की वजह से दुःख उठाना पड़ा था। मेरे पाप के दुष्परिणाम बहुत बुरे थे, और उन्हीं के द्वारा मुझे सचमुच एहसास हुआ कि मैं कितना गलत था। उस दुःख भरे समय में, मेरा एक अठहत्तर वर्ष की आयु का मित्र था, जिसका नाम जूनियर था। जब हम मिले, तब जूनियर काफी समय से मसीही था और उसे ईश-विज्ञान की पुरानी पुस्तकें पढ़ने का अधिक शौक नहीं था, परन्तु वह मुझे मसीह का प्रेम दिखाने के लिए पूरी तरह से समर्पित था। वह मेरे समीप आया, मेरे घर के कामों में मेरी सहायता की, मेरे दुःख में मेरे साथ बैठा, और मुझे प्रोत्साहित किया कि मैं अपने संघर्षों को प्रार्थना में प्रभु के सामने रखूँ। जूनियर मेरे लिए एक उदाहरण था, और उसके उदाहरण में मैंने अपने लिए परमेश्वर का प्रेम देखा। हर किसी को एक जूनियर की आवश्यकता होती है। असल में, हर किसी को ऐसी कलीसियाओं की आवश्यकता होती है, जो जूनियर जैसे लोगों से भरी हों, जो हमेशा एक-दूसरे को आगे बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करने के तरीके ढूँढ़ते रहते हैं।

मेरी कलीसिया में हम इस तरह की देखभाल को बढ़ावा देने का एक तरीका अपनाते हैं, जो कलीसिया की वाचा के माध्यम से होता है। यह बहुत पुराना तरीका है, परन्तु हममें से हर किसी को यह याद दिलाने में बहुत प्रभावी है कि हमने एक-दूसरे से क्या प्रतिज्ञा की है। प्रभु-भोज लेते समय और अपनी सदस्यता-सभाओं से पहले, हम एक-दूसरे के साथ इस वाचा को फिर से दोहराते हैं। हमारी वाचा का एक छोटा सा हिस्सा यहाँ दिया गया है:

हम भाईचारे के प्रेम में एक साथ वैसे ही चलेंगे, जैसे एक मसीही कलीसिया के सदस्यों को चलना चाहिए, और एक-दूसरे की स्नेहपूर्वक देखभाल करेंगे और निगरानी रखेंगे, और जब भी आवश्यकता पड़े, हम एक-दूसरे को विश्वासयोग्यता के साथ चिताएँगे और समझाएँगे।

हम एक साथ इकट्ठा होना नहीं छोड़ेंगे, और न ही अपने लिए एवं दूसरों के लिए प्रार्थना करने की अनदेखी करेंगे।

हम पूरा प्रयास करेंगे कि जो भी लोग कभी भी हमारी देखरेख में हों, उनका पालन-पोषण प्रभु की शिक्षा और चेतावनी के अनुसार हो, और अपने शुद्ध एवं प्रेमपूर्ण उदाहरण से अपने परिवार और मित्रों के उद्धार की कामना करेंगे।

हम एक-दूसरे की प्रसन्नता में आनन्द मनाएँगे, और कोमलता एवं सहानुभूति के साथ एक-दूसरे के बोझ और दुःखों को उठाने की प्रयास करेंगे।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

हो सकता है कि आपकी कलीसिया में कोई वाचा न हो, परन्तु आप लोगों के बीच एक-दूसरे के प्रति वाचाई प्रतिबद्धता होनी चाहिए। जब आप किसी मुश्किल का सामना कर रहे हों, तो आपको ऐसे विश्वासियों से भरी कलीसिया की आवश्यकता होती है, जो पूरी तरह से आपके साथ खड़े हों। अतः, चाहे आप अभी दुःख उठा रहे हों या अपने अगले दुःख की प्रतीक्षा कर रहे हों, एक स्वस्थ कलीसियाई परिवेश में परमेश्वर के लोगों पर भरोसा रखें। अक्सर परमेश्वर के लोगों के द्वारा ही हम उसकी उपस्थिति को सबसे अधिक गहराई से महसूस करते हैं और उसकी सहायता पाते हैं।

मनन के लिए प्रश्न:

1. हाल के दिनों में आपने परमेश्वर के वचन में कैसा समय बिताया है? क्या आपको इसकी प्रासंगिकता समझने में संघर्ष करना पड़ रहा है? क्या आप अपनी इस समझ में आगे बढ़ रहे हैं कि परमेश्वर कौन है और वह आपसे क्या अपेक्षा करता है?
2. परीक्षाओं और दुःखों में परमेश्वर के वचन ने आपको कैसे शान्ति दी है?
3. आपके लिए प्रार्थना में बिताया गया समय कैसा है? क्या आप ध्यान भटकने से संघर्ष करते हैं? यदि ऐसा है, तो अपने मार्गदर्शक से बात करें कि आप इस आत्मिक अनुशासन में कैसे उन्नति कर सकते हैं।
4. आपकी कलीसिया के साथ आपका मौजूदा रिश्ता कैसा है? आप उन पवित्र लोगों से प्रेम करने के बारे में और अधिक सचेत कैसे हो सकते हैं?
5. जब आपने दुःख उठाया था, तब आपने परमेश्वर के लोगों को आपकी देखभाल के लिए कैसे एक होते देखा है?

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

4

अपनी कहानी के द्वारा दूसरों से प्रेम करें

एक बार मैं टीना नाम की एक महिला से मिला। टीना का बचपन दुर्व्यवहार और अकेलेपन से भरा था। उसकी माँ को सिज़ोफ्रेनिया अर्थात् एक प्रकार के मानसिक विकार की बीमारी थी, जिसके कारण उसे अक्सर अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता था और उस समय में टीना एवं उसके भाइयों को अपना गुजारा स्वयं ही करना पड़ता था। टीना अपने पिता से कभी नहीं मिली थी, परन्तु वह अपने भाई के पिता को जानती थी और उन्हें अपने पिता जैसा ही प्रेम करती थी। ऐसा तब तक चला, जब वह उसे छोड़कर चले नहीं गए और उस समय वह दस वर्ष की आयु की थी। दस से अठारह वर्ष की आयु के बीच, टीना को याद है कि उसे एक दर्जन से अधिक पालन-पोषण करने वाले घरों में रहना पड़ा, जहाँ वह अपनी माँ के अस्पताल से लौटने प्रतीक्षा करती थी। सबसे दुःखद बात यह थी कि टीना का यौन शोषण एक पुलिस अधिकारी ने और उस पुलिस अधिकारी के बेटे ने और उसके पास्टर ने किया था।

उसकी कहानी सुनकर मेरा जी मिचलाने लगता है और मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। कोई व्यक्ति किसी बच्चे के साथ इतना बुरा बर्ताव कैसे कर सकता है? परमेश्वर के अनुग्रह से, जब टीना बारह वर्ष की आयु की थी, तब उसने सुसमाचार सुनकर उस पर विश्वास किया। भले ही उस समय से लेकर अपना शहर छोड़कर जाने योग्य आयु की होने तक उसने बहुत दुःख उठाए, तौभी उसने यीशु पर भरोसा करना कभी नहीं छोड़ा और उसे विश्वास था कि यीशु उसका उद्धार करेगा। बड़ी होने पर, टीना ने ऐसी ही पृष्ठभूमि वाली अनगिनत महिलाओं को परामर्श दिया है और उनकी देखभाल की है। एक बार मैंने उसे यह कहते सुना था, “मैं स्वयं को इतना दुःख उठाने के योग्य समझे जाने के लिए विनम्र महसूस करती हूँ, जिससे कि मैं उन

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

बहुत से लोगों की सहायता कर सकूँ, जिन्होंने इन्हीं बातों में दुःख उठाए हैं।” वाह! यह परमेश्वर के अनुग्रह का एक अद्भुत प्रमाण है।

1. परमेश्वर दूसरों की भलाई के लिए हमारे दुःखों का उपयोग करता है

मैं हैरान होता हूँ कि क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है कि परमेश्वर आपकी कहानी का उपयोग उन लोगों की सहायता करने के लिए कैसे करेगा, जिन्होंने आपकी ही तरह दुःख उठाया है। हो सकता है कि आपकी कहानी टीना की कहानी जैसी बिलकुल न हो, परन्तु टीना की ही तरह, परमेश्वर दूसरों की सहायता करने के लिए आपकी कहानी का उपयोग करने की भी मंशा रखता है। मैंने एक बार एक पास्टर को यह कहते हुए सुना था कि परमेश्वर हमारे दुःख को कभी व्यर्थ नहीं जाने देता। मेरे विचार से यह बात कई तरीकों से सच है। यह सच है कि परमेश्वर हमारी पीड़ा का उपयोग हमारी भलाई के लिए करता है, और उस पीड़ा के माध्यम से हमें और भी अधिक यीशु जैसा बनाता है। यह भी सच है कि वह हमारी पीड़ा का उपयोग दूसरों की सहायता करने के लिए करता है, जिससे कि वे भी अपने दुःखों के माध्यम से और भी अधिक यीशु जैसे बन सकें।

पौलुस ने कुरिनथ की कलीसिया को लिखा, “हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; जिससे कि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हो” (2 कुरि. 1:3-4)। क्या आपने हमारे क्लेश सहने और फिर भी शान्ति पाने के बीच के जुड़ाव पर ध्यान दिया है, कि हम उन लोगों को शान्ति दें जो क्लेश सहते हैं? इस जुड़ाव में हम तीन बातें देखते हैं: 1. कि परमेश्वर शान्ति का परमेश्वर है। 2. कि परमेश्वर क्लेश सहने वाले लोगों को शान्ति देता है। 3. कि परमेश्वर और उसके लोगों के बीच का रिश्ता इतना गहरा है कि परमेश्वर अपने किसी एक क्लेश सहने वाले बच्चे को, किसी दूसरे बच्चे के माध्यम से सार्थक रूप से शान्ति पहुँचा सकता है।

क्या आप परमेश्वर के द्वारा उपयोग होना चाहते हैं? तो फिर, अपने दुःखों का उपयोग उन दूसरों की सहायता करने के लिए करें, जो दुःख उठा रहे हैं। परमेश्वर ने आपको जो शान्ति दी है, उसका उपयोग दूसरों को शान्ति देने के लिए करें। व्यावहारिक रूप से, इसका अर्थ यह हो सकता है कि आप किसी दुःखी व्यक्ति को सलाह दें या उसे प्रोत्साहित करें। यद्यपि, अधिकतर समयों में, इसका अर्थ यह होता है कि आप उस व्यक्ति के पास बैठें, जिसका

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

जीवन बिखर गया है और उसे यह बताएँ कि आप उनसे प्रेम करते हैं और उनके लिए प्रार्थना करने को और जिस भी तरह से हो सके, आप उनकी देखभाल करने के लिए समर्पित हैं।

2. अपने क्लेशों के लिए परमेश्वर को महिमा देने का प्रयास करें

यह बात थोड़ी अजीब लग सकती है। क्या आशीषों के लिए परमेश्वर की महिमा देनी चाहिए? यह आसान बात है। यह समझ में आता है। क्या दुःख उठाने के लिए उसे महिमा देनी चाहिए? यह समझना थोड़ा मुश्किल है। यहीं पर याकूब की बात आती है। याकूब उन कई मसीहियों को जो दुःख उठा रहे थे, इस बारे में लिख रहा था कि उन्हें दुःख उठाते हुए क्या करना चाहिए। उसने उनसे कहा, “हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो” (याकू. 1:2)। इसको पूरे आनन्द की बात समझो? दुःख से आनन्द कैसे मिल सकता है? याकूब लिखता है, “यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे” (याकू. 1:3-4)। दुःख उठाने से हम मसीह जैसे बनते हैं, और मसीह जैसा बनना ही सबसे बहुमूल्य बात है।

मेरे विचार से हम आपके दुःख उठाने और मसीह जैसा बनने के बीच के रिश्ते को थोड़ा और गहराई से समझ सकते हैं। मसीह की हमारे लिए की गई सेवा की सबसे बड़ी पहचान यह है कि हमारी जगह उसने दुःख उठाया और अपना प्राण दे दिया। ध्यान दें कि पौलुस किस तरह मसीह के दुःख को अपने दुःख से जोड़ता है, और कैसे वह दोनों को परमेश्वर के लोगों की भलाई के लिए काम करते हुए देखता है। वह कुलुस्सियों को लिखता है, “अब मैं उन दुःखों के कारण आनन्द करता हूँ...” यह याकूब की बात जैसा सुनाई पड़ता है न? “...जो तुम्हारे लिये उठाता हूँ और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी करता हूँ” (कुलु. 1:24)। “घटी... पूरी करता हूँ” का यह विचार इस बात का संकेत नहीं है कि मसीह का दुःख उठाना पर्याप्त नहीं था। इसके बजाय, मसीह की देह का निर्माण करने की उसकी सेवकाई में पौलुस स्वयं को मसीह का साझीदार समझता है। और मसीह एवं पौलुस जो यह सेवकाई करते हैं, वह दुःख उठाने से अनोखे तरीके से जुड़ी हुई है।

यह सेवकाई केवल मसीह और पौलुस की नहीं है। यह आपकी और मेरी भी है। अक्सर जब हम दुःख उठाते हैं, तो हम अपने भीतर सिमट जाने की परीक्षा में पड़ जाते हैं, और केवल अपने ही संकट पर ध्यान देते हैं। सच कहूँ तो, इसकी भी अपनी एक जगह है। आखिरकार,

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

मैंने इस मार्गदर्शिका का आरम्भ ही विलाप के हिस्से से किया था। और तब पर भी, मसीह की देह का निर्माण करने हेतु मसीह और पौलुस की दुःख उठाने की सेवकाई में शामिल होने के लिए, आपको दूसरों के लिए अपने आप से बढ़कर सोचना होगा। यदि आपको अपनी मुश्किलों के बीच दूसरों की चिन्ता करने की आदत नहीं है, तो मैं आपको आज से ही ऐसा करना आरम्भ करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ।

मुझे याद है कि यह जानने के कुछ ही दिन बाद कि हमारा बच्चा अब जीवित नहीं रहा, एक दोपहर मैं अपनी दादी से बात कर रहा था। उन्होंने बड़े प्रेम से मुझे यह सोचने पर विवश किया कि मैं और रेचल अपने इस दुःख का उपयोग दूसरों की भलाई के लिए कैसे कर सकते हैं। उन्होंने तो यह भी सुझाव दिया कि हम अपनी कलीसिया के ही एक दूसरे जोड़े को आशीषित करने का प्रयास करें, जो ठीक उसी तरह के समय में से होकर गुजर रहा था, जहाँ से हम गुजर चुके थे— अर्थात् वे अपने आने वाले बच्चे का प्रतीक्षा कर रहे हों। आरम्भ में तो मैंने उनकी बात को हल्के में ले लिया। “हाँ, ठीक है, दादी। आपकी सलाह के लिए धन्यवाद!” उसी सप्ताह के अन्त में, मैं अपने मित्र डैरेन से मिला। डैरेन और उसकी पत्नी, क्रिस्टल, एक दशक से भी अधिक समय से हमारी कलीसिया के सदस्य थे और उनके बहुत सारे मित्र थे। हालाँकि, चूँकि हम वहाँ नये थे, इसलिए डैरेन और क्रिस्टल ने मुझे और मेरी पत्नी को रात के खाने पर आमंत्रित किया। जब हम अर्लिंगटन में एक बर्गर की दुकान की ओर जाते हुए 395वां पुल पार करके वर्जीनिया में घुस रहे थे, तो क्रिस्टल ने हमें बताया कि वे अपने पहले बच्चे की आस लगाए हुए हैं। फिर उसने हमें बच्चे के जन्म की तारीख भी बताई। यह सुनकर मेरा हृदय बैठ गया। वह ठीक उसी समय में थी, जिसमें रेचल को होना चाहिए था।

हालाँकि मैं जितना अधिक उस कार से बाहर निकलना चाहता था, उतना ही मुझे निश्चय था कि रेचल उससे भी कहीं बढ़कर उससे बाहर निकलना चाहती थी। बाकी की शाम ठीक से गुजर गई। उन्हें हमारे नुकसान के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और हमने भी उन्हें कुछ नहीं बताया। जब हम अपने घर वापस लौटे, तो मुझे लगा कि वह शाम तो पूरी तरह से बेकार गई और अब हमें कहीं और मिल ढूँढ़ने पड़ेंगे। हालाँकि, उसके कुछ ही समय बाद, डैरेन ने फिर से हमसे मिलने के लिए सम्पर्क किया। मेरा तो मन नहीं था। परन्तु मेरी दादी की कही बातें मेरे मन में याद आ रही थीं, और मैंने हाँ कह दिया। अगले छह महीनों के दौरान, डैरेन और क्रिस्टल के साथ हमारी गहरी मित्रता हो गई। उन्होंने बड़े खुले हृदय से हमें अपने पुत्र सैम

संकट में परमेश्वर पर भरोसा रखना: तब विश्वास रखना जब जीवन बिखर जाए

की तैयारियों में शामिल किया। अब रेचल और मेरे लिए सैम किसी भतीजे जैसा ही है। मैं बता नहीं सकता कि डैरेन और क्रिस्टल के द्वारा प्रभु ने हमारी कितनी भलाई की, जबकि हम उनकी भलाई करने का प्रयास कर रहे थे।

हे मेरे मित्र, यदि प्रभु ने आपके जीवन में दुःख आने दिया है, तो यह इस बात का पूरा आश्वासन है कि इसके लिए उसके कुछ ऐसे कारण होंगे, जो आप तक सीमित नहीं है। यह कितनी आशीष की बात है कि परमेश्वर आपको उपयोग करना चाहता है। अतः, जब वह ऐसा करे, तो उसकी महिमा करना। पौलुस के साथ जुड़कर अपने दुःखों में आनन्द मनाएँ, जो देह के निर्माण के लिए हैं। याकूब की बात सुनें और जब आप दुःख उठाएँ, तो इसे पूरे आनन्द की बात समझो। यह व्यर्थ नहीं होगा।

मनन के लिए प्रश्न:

1. आपके दुःख, मसीह के दुःख, और आपके जीवन में पाए जाने वाले दूसरे मसीहियों के दुःख के बीच क्या सम्बन्ध है?
2. क्या कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसके लिए आपको लगता है कि उसे प्रोत्साहित करने या परीक्षाओं में उनके साथ खड़े होने के लिए प्रभु आपकी अगुवाई कर रहा है?
3. आप परमेश्वर को इस बात के लिए महिमा देना कैसे आरम्भ कर सकते हैं कि कैसे उसने आपको दुःख सहने में सक्षम किया है?
4. आप अपने मार्गदर्शक या प्रशिक्षु से अपनी कहानी के द्वारा दूसरों से प्रेम करने के बारे में कौन से प्रार्थना निवेदन साझा कर सकते हैं?



निष्कर्ष

यदि आप लम्बे समय तक जीते हैं, तो कभी न कभी जीवन बिखर ही जाएगा। यह कठिन होने वाला है। आप हार जाएँगे। आपको चोट लगेगी। आप गिर पड़ेंगे। क्या यह शुभ समाचार है? परमेश्वर ने यीशु में और अपने लोगों में वह सब कुछ दिया है, जिसकी आपको टढ़ बने रहने के लिए आवश्यकता है। अतः, उसके सामने विलाप करें। परमेश्वर के चरित्र के बारे में और जानें एवं उसके चरित्र को अपना दुःख समझने दें। परमेश्वर पर और उसके लोगों पर भरोसा रखें। और अन्त में, उन दूसरे लोगों से प्रेम करें जो इसी तरह का दुःख उठा रहे हैं।



टेलर हार्टली वॉशिंगटन, D.C. में 9Marks में सम्पादकीय निदेशक के रूप में काम करते हैं। उनकी पत्नी, रैचल से उनका विवाह हुआ है, और उनके बॉड नाम का एक बेटा है। टेलर ने सदर्न बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी से अपनी M.Div. की डिग्री हासिल की है और अभी UK में लंदन सेमिनरी में अपनी Th.M. की पढ़ाई कर रहे हैं।

